MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

# Vidya warta®

Peer Reviewed International Multilingual Research Journal
Issue-41, Vol-10, Jan. To March 2022

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

27) शेळी शेती शाश्वत आर्थिक विकास आणि स्वयंरोजगार निर्मितीचे एक साधन
प्रा. डॉ. जगन्नाथ मोतीराम साळवे, बारामती, जि.पुणे ||106

28) हिन्दी आलोचना मे छायावादी स्वरूप
कुमारी सोनी, दरभंगा ||110

29) लोकतन्त्र में विपक्ष की भूमिका
डॉ (श्रीमती) दर्शना, बरहज, देवरिया ||114

30) देवेन्द्र सिंह के उपन्यास अत्ता–पत्ता में स्त्री–पात्रों की भूमिका
अमित कुमार, भागलपुर ||117

31) विद्यालय में पाठ्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्ता
डॉ. रवेन्द्र राजपूत, अलीगढ़ ||119

32) बाल्यावस्था के बालक एवं बलिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि व संज्ञानात्मक....
सुधा दूबे, डॉ. (श्रीमती) अपर्णा शर्मा, मुरार, ग्वालियर (म.प्र) ||127

33) महात्मा गांधी के सत्याग्रह संबंधी अवधारणा
शेषनाथ कुमार, रांची ||132

34) समाज में गिरते जीवन मूल्य एवं मानवीय संवेदनशीलता
कमलेश प्रसाद प्रजापति, बुढ़ार, जिला शहडोल ||136

35) ऑनलाइन शिक्षा के सन्दर्भ में अभिभावकों की भूमिका
नीलम सिंह, डॉ. सुरक्षा बंसल, मोदीपुरम (मेरठ), इण्डिया। ||139

36) कविता में स्त्री : भूमण्डलीकरण के बाद
डॉ अजिता, लखनऊ ||147

37) कौरवी क्षेत्र में धार्मिक परम्पराएं और देवी देवताओं के संदर्भ में लोकगीतों की भूमिका
युधिष्ठिर कुमार, डॉ. कविता त्यागी, मेरठ ||149

38) अजमेर–मेरवाड़ा का सामाजिक इतिहास
राजेन्द्र कुमार मीना, जयपुर ||156

39) साठोत्तरी मिथकीय नाटकों में नारी चेतना
लैफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील, कोल्हापुर, ||162

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

39

# साठोत्तरी मिथकीय नाटकों में नारी चेतना (कुंती का परिताप के संदर्भ में)

लैफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील,
राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापुर,

**********

प्रस्तुत नाटक रामकुमार वर्मा की बहुचर्चित मिथकीयनाटक है। इसमें भोजपुर के महाराजा कुंतिभोज राज–सभा का बडे धूमधाम से आयोजन करते हैं। रत्न जडित सिंहासन पर वे बडे उत्साह और आशा से बैठे हुए है। कारण है, महाराजा कुंतिभोज की बेटी और भोजपुर की राज्यकन्या कुंती की सोलहवें जन्म दिवस की। सारे भोजपुर में यह दिन उत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। एक पवित्र दिन के रूप में जन्म दिवस मनाया जा रहा है। पुरे राजमहल में महाराजा कुंतिभोज का जयजयकार हो रहा है।इस समारोह को अधिक सुंदरता प्रदान करने के लिए दूर–दूर से नर्तकियों को लाया गया है। इस संबंध में भोजपुर के मंत्री श्वेतभद्र की उक्ति दृष्टव्य है, "महाराज की जय! सभासदी। महाराज कुंतिभोज की परम सुंदरी और सौभाग्यशाली कन्या कुंती के सोलहवें जन्मोत्सव का आज पवित्र दिन है। इस अवसर पर समस्त नगर में आनंद और उल्लास की लहरें तरंगित हो रही है। इस जन्म–दिन को अधिक शोभा संपन्न बनाने के लिए 'मधुपुरी के महाराज शूरसेन ने कुशल नर्तकियों को यहाँ भेजा है। आप उनका नृत्य देखें। नृत्य आरंभ हो।''[1] नर्तकियों द्वारा नृत्य और गीत पेश किया जाता है और खुश होकर कुंतिभोज नर्तकियों एवं शूरसेन का यथोचित सम्मान भी करते हैं। तभी प्रतिहारीका आगमन हो जाता है। अचानक दुर्वासा के आगमन से महाराजा चिंतित नजर आते हैं और स्वयं महर्षि दुर्वासा के स्वागत के लिए चले जाते हैं। कुंतिभोज महर्षि दुर्वासा का यथोचित स्वागत करते है। परन्तु उग्र स्वभाववाले महर्षि दुर्वासा सगोत समागम के कारण पुछते है। तभी दुर्वासा राजकुमारी कुंती से सेवा करवाने की इच्छा प्रकट करते है। "मै कुंती की सेवा ग्रहण करने के लिए यहाँ आया हूँ। उसके भविष्य की रूपरेखा बनाऊँगा। मै यही निवास करूँगा। यहाँ भिक्षान्न भोजन करूँगा और कुंती की सेवा ग्रहण करूँगा।''[2] उग्र दुर्वासा के इच्छा के अनुसार कुंती को दुर्वासा के सेवा के लिए प्रस्तुत किया जाता है। वह उसे खुशी से स्वीकार करती है। वह निरंतर एक वर्ष तक महर्षि दुर्वासा की सेवा करती है। इस अद्वितीय सेवा से महर्षि दुर्वासा काफी प्रसन्न हो जाते हैं। उसकी सेवा और बुद्धिसे प्रसन्न होकर महर्षि उसे एक वरदान माँगने के लिए कहते है। परंतु कुंती सेवा को ही सबसे बडा वरदान मानती हैं। कुंती के वरदान न माँगने पर दुर्वासा स्वयं वरदान दे देते है, 'मैं तुम्हें ऐसा मंत्र दूँगा जिससे तुम देव–सृष्टि के किसी भी देवता का आवाहव कर अपनी इच्छा की पूर्ति कर सकती हो कैसी भी इच्छा हो व अपूर्ण नहीं रहेगी

यं यं देव त्वमेतेन मंत्रणावाहायिष्यासि।
तेन–तेन वशे भद्रे स्थातव्य ते भविष्यति।।''[3]

अंत में किसी भी देवता का आवाहन करने पर उससे एक सुंदर पुत्र प्राप्त होने का वरदान दे देते हैं। महर्षि दुर्वासा के इस वरदान से कुंती काफी चिंतित हो जाती है। कोमार्य में इस वरदान को प्राप्त करना वह अपने लिए खुद्खुशी के समान मानती है।

इस वरदान से कुंती काफी दु:खी हो जाती है। कुंती को चिंतित देखकर उसकी सखी मंजरी चकित हो जाती है। वह कुंती से पुछती है कि तुम वरदान से खुश होने के बजाय दु:खी क्यों हो? वह कहती है कि तुम उग्र स्वभाववाले महर्षि दुर्वासा को अपनी सेवा से परम शांत मुनि बनाया। सखी मंजरी के बार–बार प्रश्न पुछने पर कुंती मंत्र के बारे में मंजरी को बताती है। वही दुसरी ओर कुंती उसे शाप मानती है। तभी परिचारिका महाराजा कुंतिभोज के आने की सुचना देती है। महाराजा कक्ष में प्रवेश करते हैं। अपनी बेटी द्वारा महर्षि दुर्वासा का यथोचित सेवा से वे काफी प्रभावित दिखते हैं। अपनी बेटी पर काफी गर्व महसूस करते है। अंत में दुर्वासा द्वारा दिए वरदान के संदर्भ में जानना

Rankranti 162

धुनिक हि
चेतना



चाहते है। परंतु कुंती महाराजा कुंतिभोज को इस वरदान के बारे में बताना नहीं चाहती। बेटी कुंती को आशीर्वाद देकर महाराजा वहाँ से चले जाते है। कुंती और सखी मंजरी इस वरदान से एक विचित्र द्वंद्वं में फँस जाते है। कुमारी होने के कारण कुंती उस वरदान को शाप मानती है, "मैंकुमारी हूँ। मेरा विवाह अभी नहीं हुआ है। यदि मैं किसी देवता का आवाहन करे संतानवती बनती हूँ तो क्या यह मेरे लिए, मेरे पिता के लिए, मेरे परिवार के लिए मेरे वंश के लिए कलंक की बात नहीं होगी और विवाह के बाद आवाहन कर संतानवती बनती हूँ तो क्या यह मेरे पति के लिए अपमान और लज्जा की बात नहीं होगी?"[४] इस प्रकार पश्चाताप से तडपती कुंती का जीवन अत्यंत दयनीय हो जाता है। वह स्वयं राजा कुंतिभोज और भोजपुर के राज के बारे में सोचने लगती है। वह अपने मातृत्व के लिए दैवी वरदान का सहारा लेने के लिए कदापि तैयार नहीं है।

अंत: कुंती और मंजरी दोनों मिलकर महर्षि दुर्वासा के वरदान की सत्यता परखने की बात करते है। वे किसी देवता की अपेक्षा देवी की नामस्मरण ले के मंत्र उच्चारण करने की ठान लेती है। वह उषा देवी का आवाहन करती है। परिणामत: मंत्र के उच्चारण से उषा देवी प्रकट होती है। कुंती द्वारा आवाहन करने का कारण बताने पर उषा–देवी कहती है कि तुने मेरा आवाहन करके एक प्रकार से देवता का ही आवाहन किया है। तुम जानती हो कि मेरा आवाहन करने के पश्चात भगवान भास्कर का ही आवाहन होता है। इस बात से कुंती भयभीत हो जाती है। उषा देवी वहाँ से चली जाती है और वहाँ भगवान भास्कर का आगमन हो जाता है। कुंती भगवान सुर्य को प्रणाम करती है, और घटित घटना में के बारे में बताती हैं। सुर्यदेवता सभी बातों को जानता है। परंतु इस वरदान के सामने वह भी विवश हो जाता है। लाख याचना करने पर भी सुर्यदेव अपनी नियमों को तोडना नहीं चाहता। वह कहता है, 'देवि। यह असंभव है। महर्षि के अमोध मंत्र का आदेश है कि मैं तूम्हें संतान हूँ। एकाकिनी रहकर तुम्हारा रूप क्या होगा? तुम अंत:करण के एक बिंदू में समाकर रह जाओगी, संतानवती होकर तुम सिंधु के समान लहरा उठेगी।"[५] लज्जा एवं राजवंश को कलंक ना लगे इस कारण कुंती धाय माँ मालती और सेविका (सखी) मंजरी के साथ अश्व नदी के तट पर एकांत शिविर में रहने लगती है। वह बारदृवार दुर्वासा ऋषि को कोसने लगती है। वह आत्महत्या के बारे में सोचती है परंतु राजवंश के इज्जत के खातिर वह आत्महत्या भी नही कर पाती। एक दिन वह एक सुंदर शिशु को जन्म देती है। वह अपने आपको बचाने की कोशिश तो बहुत करती है परंतु इस घटना से बच नही सकती वह अंत में कुवारी माता बन जाती है। कुंती शिशु दृ जन्म से प्रसन्न होने के बदले दु:खी है। मंजरी और धाय माँ मालती के लाख समजाने पर भी वह शांत नहीं होती। वह अपने आपको धिक्कारती है। वह कहती है, "क्या करूँ? आत्महत्या कर तू? आत्महत्या। इस कलंकिनी का कोई मुख न देखे, इसलिए आत्महत्या करूँ? किंतू क्यों करूँ? मैं क्षत्राणी हूँ। चंद्रवंश से उत्पन्न क्षत्राणी तलवार लेकर जाऊँ और उस दुर्मुख दुर्वासा से कहूँ कि ठहर संन्यासी, तेरे वरदान के बदले मैं क्षत्राणी कुंती तुझे युद्ध दान देने के लिए हूँ युद्ध–दान। संन्यासी मृग–चर्म से अपना बचाव करेगा तो मैं उसका मस्तक काटकर आकाश में उछाल दूँगी और सूर्य भगवान से कहूँगी लो भुवन भास्कर! मैं तुम्हेंपृथ्वी पर आने का कष्ट देनेवाले महामुनि का शीश समर्पित कर दिया। किंतु फिर एक पाप और लगेगा ब्रह्म हत्या का ब्रह्म–हत्या का। नहीं–नहीं, यह उचित नहीं। फिर मैं....मैं क्या करूँ?"[६] पुत्र के काव्य पर हर माता के हर्ष की कोई सीमा नहीं होती परंतु यहाँ कुंती मातृत्व की ज्वाला में जल कर भस्म हो रही है। वह इस तेजस्वी शिशु को लेकर अपने पिता कुंतिभोज के सामने कैसे जाऊँ? भाई बंधुओं से क्या कहूँ? उन्होंने अभी विधिवत मेरा विवाह भी नहीं किया। मैं अभी कुमारी हूँ। लोक लज्जा के कारण मैं अपना मुख किसी को दिखा नहीं सकती इन बातों से वह काफी लज्जित दिखायी देती है। वह अपने शिशु को मंजरी को स्वीकार करने के लिए कहती है, परंतु मंजीरी भी अविवाहित होने के कारण शिशु को स्वीकारने से मना करती है। अंत में धाय माँ कुंती के सामने एक उपाय बताती है, "इस दिव्य

बालक को एक पिटारी में सुला कर अश्व नदी की धारा में प्रवाहित......।''⁹ इस बात को सुनते ही कुंती चौंक कर कहती है मेरे इस अपराध का दंड इस अबोध बालक को क्यों? वह कुंती शिशु को नदी के प्रवाह में छोडने का विरोध करती है। धाय माँ कुंती को समझाती है कि राजवंश को कलंक लगना पूर्वजों की कीर्ति भी नष्ट कर देता है। इस कार्ति–रक्षा के लिए मनुष्य अपने प्राण भी दे देते है। आखिर शिशु को प्रवाह में छोड देने से राज भी कलंक से बच जाएगा और शिशु भी बच जाएगा। धाय माँ और मंजरी के समझाने से कुंती अपने दिल पर पत्थर रखकर इस उपाय का स्वीकार करती है।कुंती इस उपाय का स्वीकार तो करती है। कुंती इस उपाय का स्वीकार तो करती है, परंतु उसकी आँखों से निरंतर आँसु धाराएँ बहने लगती है। तब मंजरी और धाय माँ इस बात को भाग्य की बात कहकर कुंती को समाजाते हैं। अंत में वह अपने शिशु का मुख्य देखते हूए कहती है, ''जाओ मेरे लाल ! तुम्हारा यह सुंदर मुख अब कभी न देख पाऊँगी। मैं अभागिन माँ तेरे मधुर बोल सुन भी नहीं सकी और तू मुझे छोडकर चला जा रहा है। क्षत्रायणी होकर मैं समाज के सामने शूद्रा बन गई।''

संदभ:

१. डॉ. रामकुमार वर्मा,'कुंती का परिताप', वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण, १९९५, पृ.३)

२. वही, पृ. ०७

३. वही, पृ. १९

४. वही, पृ. २५

५. वही, पृ. ३७

६. वही, पृ. ४४

७. वही, पृ. ५४

ЖЖЖ

है
धा
प्र
र्मा
मि
र्धा
ही
सव
योग
में
ऐति
इति
है।
कवि
रेऊ,
देवी
राठौड़
दूदा
जोधपु
पड़पो
इनके
मेवाड़
गई थ